मीना की दुनिया
रेडियो कार्यक्रम मीना

मीना रेडियो कार्यक्रम से पुनः कथित

भाग दो

मीना की दुनिया

मनोरंजक कहानियों का संग्रह

सबसे बड़ा इन्सान | सुनहरी को बचाओ | कौन बनेगा स्टार?
सुनील का जादुई चिराग | अनोखा तोहफ़ा

unicef

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

unicef

सितम्बर 2011

मीना की दुनिया

भाग दो

विषय सूची

सबसे बड़ा इन्सान 03

सुनहरी को बचाओ 09

कौन बनेगा स्टार? 15

सुनील का जादुई चिराग 21

अनोखा तोहफ़ा 25

नन्हे पाठकों के शिक्षकों के लिए 31

KATHA

डिज़ाइन एवं प्रतिलेखन कथा, दिल्ली द्वारा

सबसे बड़ा इन्सान

सुनील कब से आधी छुट्टी होने का इंतज़ार कर रहा था। "कब बजेगी घंटी?" यह सोच–सोच कर सुनील के मुँह में पानी आ रहा था। तभी घंटी बजी और सभी बच्चे स्कूल के रसोईघर की तरफ़ दौड़े।

"अरे वाह, मज़ा आ गया! कितना स्वादिष्ट खाना है, मैं तो सारा का सारा खा जाऊँगा," सुनील गपागप खाते हुए बुदबुदाया।

पास बैठी मीना ने ठिठोली करते हुए कहा, "मोटू कहीं के, आराम से खा, इतनी भी क्या जल्दी है?"

"अरे मीना, रामू काका ने खाना इतना स्वाद जो बनाया

है, और फिर मुझे मुकाबला भी तो जीतना है!" सुनील बोला।

"मुकाबला? कैसा मुकाबला?" मीना ने हैरानी से पूछा।

सुनील ने बड़े गर्व से बताया, "मेरे और दीपू में पेड़ पर चढ़ने का मुकाबला! हम दोनों में से जो भी सबसे ऊँची डाल को छू लेगा, वह अगले सप्ताह साथ वाले गाँव के रमेश के साथ मुकाबला खेल पाएगा। तुम भी चलो ना हमारा मुकाबला देखने!"

"नहीं सुनील, मैं पहले सुमी के घर जाकर उसे आज का पाठ समझाऊँगी। पता नहीं वह आज स्कूल क्यों नहीं आई! तुम लोग जाओ," यह कहकर मीना सुमी के घर की ओर चल दी।

और उधर, सीटी बजते ही सुनील और दीपू पेड़ों पर चढ़ने लगे। आस–पास खड़े सभी बच्चे उनका उत्साह बढ़ा रहे थे। जैसे–जैसे वे छोटी–बड़ी, मोटी–पतली

टहनियों को नीचे छोड़ते हुए ऊपर बढ़ रहे थे, वैसे–वैसे नीचे से आती हुई आवाज़ें तेज़ होती जा रहीं थी – जल्दी चढो! ... अरे! सम्भलकर पैर रखो ... बहुत बढ़िया!

"हुरररररर्रे! सुनील जीत गया!" सभी ने मिलकर सुनील को बधाई दी।

अगले दिन सुबह स्कूल में मीना ने भी सुनील को बधाई दी, "वाह सुनील! कल तो तुमने कमाल ही कर दिया।" इससे पहले कि मीना कुछ और कहती, आधी छुट्टी की घंटी बज गई।

सभी बच्चे रसोईघर पहुँचे। पर यह आज रामू काका दिखाई क्यों नहीं दे रहे?!

तभी बहनजी ने बताया, "बच्चों, रामू काका की तबीयत अचानक खराब हो गई है, जब तक वह नहीं आते शम्भू काका खाना बनाएँगे और हम सब को खिलाएँगे।"

यह सुनकर तो मानो सुनील को साँप ही सूंघ गया। वह खाना छोड़ कक्षा में वापस चला

गया। और उस दिन से सुनील ने स्कूल में मिलने वाला खाना खाना बंद कर दिया। वह काफी सुस्त भी रहने लगा।

एक सप्ताह बाद सुनील और रमेश के मुकाबले वाले दिन ...

सुनील और रमेश पूरी तैयारी में थे। इशारा मिलते ही दोनों ने पेड़ पर चढ़ना शुरू किया। उन्हें घेरे सभी बच्चे तालियाँ बजा रहे थे।

पर यह क्या! "सुनील बार–बार अपने एक हाथ से अपने सिर को क्यों दबा रहा है? लगता है उसे चक्कर आ रहे हैं!" सुमी घबराकर बोली।

तभी मीना चिल्लाई, "सम्भालो अपने आपको सुनील और डाल को पकड़े रहना। मैं अभी किसी को बुलाकर लाती हूँ।"

मीना तुरन्त गई और शम्भू काका को बुला लाई और वह फुर्ती से पेड़ पर चढ़ गए।

"लाओ सुनील, अपना हाथ दो," शम्भू काका ने सुनील से कहा।

"अरे! सुनील शम्भू काका की तरफ़ अपना हाथ क्यों नहीं बढ़ा रहा?" सुमी ने हैरानी से पूछा।

"शम्भू काका को अपना हाथ दो सुनील वरना नीचे गिर जाओगे ..." दीपू चिल्लाया।

आख़िर सुनील ने हिचकिचाते हुए शम्भू काका को अपना हाथ दे ही दिया और वे उसे पेड़ से नीचे ले आए।

इतने में बहनजी भी आ गईं। उन्होंने सारी बात सुनी और शम्भू काका का धन्यवाद किया। फिर बहनजी ने सुनील से पूछा, "सुनील तुम्हें चक्कर कैसे आ गए, आज खाना नहीं खाया क्या?"

तभी दीपू तपाक से बोल पड़ा, "बहनजी इसने तो स्कूल का खाना तब से नहीं खाया जब से शम्भू काका आए हैं।"

"क्या तुम भी ऊँच–नीच के भेदभाव में विश्वास रखते हो सुनील?" बहनजी नाराज़गी से बोली।

"नहीं नहीं बहनजी!" सुनील बेहद शर्मिंदा होकर बोला।

उस रात सुनील सो नहीं सका, बार–बार वही दो मज़बूत हाथ ...

अगले दिन स्कूल में आधी छुट्टी की घंटी बजते ही सभी बच्चे, रोज़ ही की तरह, रसोई की ओर दौड़े। बहनजी ने सभी पर सरसरी नज़र दौड़ाई और फिर मीना से पूछा, "मीना! क्या आज भी सुनील नहीं आया?"

"बहनजी, वो देखिए! आज तो खाने का स्वाद दुगना हो जाएगा, काका के साथ उनका नया चेला जो है!" मीना हँसते–हँसते बोली।

सुनहरी को बचाओ

टन टन टन टन ... स्कूल की घंटी बजी और बच्चों की झड़ी स्कूल से बाहर निकली। मीना और उसके दोस्त रोज़ ही की तरह बाते करते घर की ओर जा रहे थे, कि तभी पास के सूखे कुएँ से रंभाने की आवाज़ सुनाई पड़ी। मीना और उसके दोस्त कुँए के पास दौड़े और भीतर झांक कर देखा। अरे, यह तो रानो की बछिया सुनहरी है! सुनहरी को कुँए में गिरा देख, रानो खूब ज़ोर–ज़ोर से रोने लगी।

मीना ने रानो को दिलासा देते हुए कहा, "रो मत रानो, सब ठीक हो जाएगा। मैं अभी जाती हूँ और बहनजी को

बुलाकर लाती हूँ।"

मीना फ़ौरन गई और बहनजी को ले आई। बहनजी को देख रानो *मेरी सुनहरी .... मेरी सुनहरी* कह बिलख–बिलखकर रोने लगी। बहनजी ने रानो को समझाया, "रानो! हर समस्या का कोई ना कोई हल होता है .... अगर हम समस्या से ही घबरा जाएँगे, रोने लगेंगे, तो उसका हल कैसे सोचेंगे, बोलो! चलो अब रोना बंद करो, हम सब मिलकर इसका हल सोचते हैं।"

फिर सभी बच्चे और बहनजी एकजुट हो सोचने लगे।

दीपा बोली, "बहनजी, क्यों न हम एक लंबी सीढ़ी कुँए में डाल दें, उसपर चढ़ सुनहरी बाहर आ जाएगी ... है ना?"

"पर इतनी लंबी सीढ़ी आएगी कहाँ से?" सभी ने हैरानी से पूछा।

सुमी ने भी तरकीब सुझाई – "अगर एक मोटी रस्सी होती तो उसे पकड़कर मैं नीचे जाती और सुनहरी को ऊपर ले आती।"

"यह कैसे हो सकता है? सुनहरी तुम्हारी छोटी–सी बकरी मुन–मुन थोड़ी ही है जिसे उठाकर तुम ऊपर ले आओगी," बहनजी ने समझाते हुए कहा।

रीतू ने कहा, "अगर हम कुँए में कुर्सी डालें तो? जब मुझे घर में ऊपर से कोई चीज़ उठानी होती है तो मैं कुर्सी पर चढ़, उतार लेती हूँ ... ऐसे ही सुनहरी कुर्सी पर चढ़ ..."

"क्या सुमी, सुनहरी कुर्सी पर कैसे चढ़ सकती है? और वैसे भी हम इतनी ऊँची कुर्सी कहाँ से लाएँगे?" दीपा ने कहा।

"अब हम क्या करें?" सभी बच्चे गंभीर स्वर में बोले।

तभी मीना ने सुझाई एक तरकीब।

वह बोली, "देखो आस–पास कितनी मिट्टी है! अगर हम कुँए में बहुत सारी मिट्टी डालें तो हो सकता है कि सुनहरी उस पर चढ़ कर ऊपर तक आ जाए।"

"अरे हाँ! बिल्कुल वैसे ही जैसे प्यासे कौवे ने घड़े में कंकड़ डाल–डाल कर पानी पिया था," रीतू ताली बजाते

हुए बोली।

"पर अगर मेरी सुनहरी मिट्टी के नीचे दब गई तो?" रानो ने घबराकर पूछा।

"ऐसा नहीं होगा रानो। हम कुँए के एक तरफ़ घास डाल देंगे। जब सुनहरी घास खाएगी तो हम दूसरी तरफ़ मिट्टी भर देंगे," मीना ने कहा।

"शाबाश मेरे बच्चों! चलो अब जल्दी करो," बहनजी बोलीं।

सभी बच्चे काम में जुट गए और मिट्टी इकट्ठा कर कुँए में डालने लगे।

धीरे–धीरे सुनहरी ऊपर आने लगी और आख़िरकार कुँए से बाहर आ गई।

बहनजी बोली, "देखा बच्चों, हम सब की मेहनत और सूझ–बूझ से ही हम सुनहरी को कुँए से बाहर निकाल पाए। याद रखना, कभी भी कोई मुश्किल आए तो सबसे

पहले उसके बारे में सोचो ... जो रास्ता सबसे सही लगे उसे चुन लो ... बस, हो गई मुश्किल दूर।"

"अब मैं ऐसा ही करूँगी बहनजी!" रानो ने कहा, और सुनहरी को सहलाते, अपने सभी दोस्तों का धन्यवाद किया।

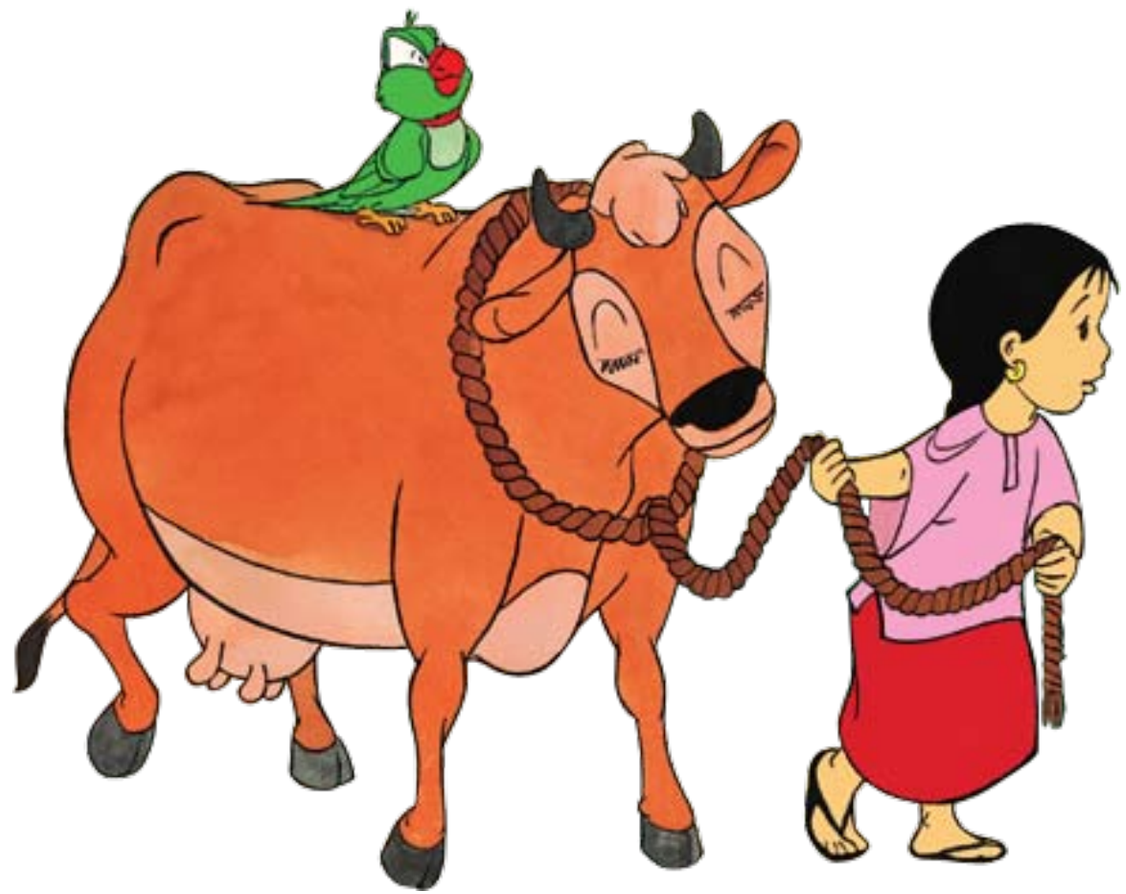

सुनील का जादुई चिराग

रविवार की एक सुबह सुनील अपनी साईकिल चमका रहा था, कहीं जाने की तैयारी में। मीना और दीपू वहीं से गुज़र रहे थे। सुनील को साईकिल चमकाते देख उन्होंने उससे पूछा कि वह कहाँ जा रहा है और सुनील ने बताया कि वह अपने दादाजी के घर जा रहा है। उसे इस महीने भी, एक भी छुट्टी न लेने के कारण, स्कूल में पुरस्कार से सम्मानित किया गया था और यही बात वह अपने दादाजी को बताने उनके घर जा रहा था।

तभी दीपू ने सुनील से कहा, "सुनील, तुम तो महीने में एक भी छुट्टी नहीं लेते, भला यह कैसे? तुम्हारे हाथ

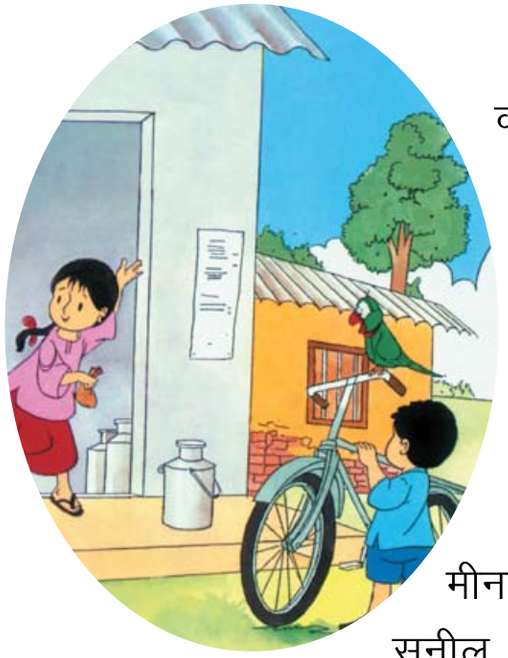

कोई जादुई चिराग लग गया है क्या?"

सुनील ने हँसते हुए कहा, "हाँ बिल्कुल! क्या तुम भी जानना चाहोगे इस जादुई चिराग के बारे में?"

"ज़रूर, ज़रूर!!!" दीपू और मीना ने चकित स्वर में कहा।

सुनील बोला, "तो चलो मेरे साथ।"

"पर कहाँ?" मीना उचककर बोली।

"मेरे दादाजी के घर!" सुनील ने कहा।

"नहीं, नहीं! मैं नहीं जाऊँगा," दीपू बोला।

"पर क्यों?" सुनील ने हैरानी से पूछा।

"मुझे तुम्हारे दादाजी से बहुत डर लगता है। कितने लम्बे, चौड़े और दमदार हैं वे। और जादूगर भी। याद नहीं, जब पिछली बार मैं तुम्हारे साथ उनके घर गया था और भूख लगने पर मैंने चुपके से उनकी रसोई में से केला खा लिया था तो कैसे उन्होंने झट से मुझे पकड़ लिया था यह कहकर कि *केला अच्छा लगा न दीपू!* अब

भला बताओ उन्हें कैसे पता चला कि मैंने केला खाया है?" दीपू ने घबराकर पूछा।

तभी मीना बोल पड़ी – "अरे दीपू, जादू–वादू कुछ नहीं होता। चलो न दीपू!"

"अच्छा तो चलो," दीपू ने कहा।

और फिर सुनील, दीपू और मीना निकल पड़े दादाजी के घर के लिए। सुनसान जंगल में, पेड़ों के झुरमुट के बीच था सुनील के दादाजी का घर।

दरवाज़ा खटखटाने पर दादाजी ने दरवाज़ा खोला और बच्चों का स्वागत किया।

"नमस्ते दादाजी ... मेरा नाम मीना है," मीना बोली।

"खुश रहो बेटी! अरे दीपू भी आया है?" दादाजी ने दीपू की ओर देखकर कहा।

"न–न–नमस्ते द–द–दादाजी!" घबराया दीपू बोला।

"जीते रहो बेटा, बैठो मैं तुम लोगों के लिए पानी लेकर आता हूँ," दादाजी ने कहा।

"दादाजी मैं ले आती हूँ

पानी, रसोईघर कहाँ है?" मीना ने दादाजी से पूछा।

"तुम आराम से बैठो बेटी, 90 साल का हूँ, फिर भी सारा काम खुद करता हूँ। अच्छा दीपू पहले तुम ये बताओ कि तुम नहा कर क्यों नहीं आए?" दादाजी ने रसोईघर की ओर जाते हुए पूछा।

"जी वो दादाजी ...

देखा मैंने कहा था न कि दादाजी ... जादू ..." दीपू मीना से बुदबुदाया।

"यह जादू नहीं हैं दीपू!" दादाजी ने हँसते हुए कहा।

"जी आपने सुन लिया?!" दीपू आँखें झुकाकर बोला।

"हाँ बेटा! मेरे कान बहुत तेज़ हैं। तुम यही जानना चाहते हो न कि मुझे कैसे पता चला कि तुम नहाकर नहीं आए हो। तुम्हारी उँगली में लगे सियाही के इस निशान

से! अगर तुम आज नहाए होते तो यह निशान मिट जाता," दादाजी मुस्कुराते हुए बोले।

"लेकिन दीपू तुम नहाए क्यों नहीं?" मीना ने दीपू से पूछा।

"वो मैं देर से उठा तो ..." दीपू बोल ही रहा था कि दादाजी बोल पड़े, "एक और बुरी बात दीपू बेटा। जीवन में स्वस्थ रहने और आगे बढ़ने के लिए अपनी दिनचर्या का पालन करना चाहिए।"

"ये दिनचर्या क्या होती है?" दीपू अपना सिर खुजाते हुए बोला।

तभी सुनील ने कहा, "अरे, यही तो है मेरा जादुई चिराग! दिनचर्या का पालन करने का मतलब है अपने दिन के सभी कामों को रोज़, पूरे नियम से करना जैसे समय पर उठना, दाँत मांजना, नहाना, धोना, अपने शरीर की साफ–सफाई का ध्यान रखना, समय पर खाना खाना, और

समय पर सोना।"

"सुनील, क्या तुम यह सब रोज़ करते हो?" दीपू ने आश्चर्य से पूछा।

"बिल्कुल! अगर अपने शरीर का ध्यान हम नहीं रखेंगे तो कौन रखेगा?" सुनील बोला।

"बच्चों! दिनचर्या का पालन करने वाला बच्चा हमेशा स्वस्थ रहता है और जीवन में बहुत आगे बढ़ता है," दादाजी ने बच्चों को समझाते हुए कहा।

"जैसे मेरे दादाजी!" सुनील तपाक से बोला।

"तुम किस सोच में पड़ गए दीपू?" गहरी सोच में डूबे दीपू को देख दादाजी बोले।

"जी मैं वो यह सोच रहा था कि उस दिन आपको यह कैसे पता चला कि मैंने रसोईघर में जाकर केला खाया था?" दीपू ने कहा।

दादाजी ठहाका लगाते हुए बोले, "तुम्हारी जेब से बाहर झांक रहे केले के छिलके को देख कर!

यह सुन सुनील और मीना भी ज़ोर–ज़ोर से हँसने लगे।

कौन बनेगा स्टार?

मिली! मिली! मिली! पूरे गाँव में बस एक ही नाम की चर्चा थी। कबीरपुर गाँव मेले जैसा सज रहा था, रंगों से सराबोर। खाने की रेढ़ियों से भरा। ठसमठस। आखिर क्यों नहीं? शहर के नामी डायरेक्टर साहब ने इस गाँव को जो चुना था, अपनी नई फ़िल्म की शूटिंग के लिए। और तो और इस फ़िल्म का अभिनेता और कोई नहीं बल्कि युवा देश की धड़कन, सबका चहेता रंगीन कपूर था। उसके आगमन पर तो समूचा कबीरपुर शूटिंग के स्थान पर उमड़ पड़ा था। बच्चे, बूढ़े, औरतें और आदमी सभी खुशी के सैलाब मे गोता लगा रहे थे।

पर इससे मिली के नाम की चर्चा का क्या वास्ता? ओहो! मिली ही तो है वो जिसे रंगीन कपूर के साथ शूटिंग करने का मौका मिल रहा है। जब मीना को यह पता चला तो वह उछल पड़ी और मिली के घर दौड़ी।

इधर मिली अपने घर में इधर से उधर घूम रही है। डायलॉग रटने में मशगूल उसने मीना को आते हुए देखा भी नहीं।

मीना ने उसे कोहनी की, "क्यों जी। तुम अब मुझे देखोगी भी नहीं?"

"अरे मीना! अच्छा हुआ तुम आ गई," मिली ने घबराए स्वर में कहा।

"अरे! क्या हुआ? तुम तो रोमांचित लग ही नहीं रही!" मीना ने पूछा।

"मैं लाइट, कैमरा, रंगीन कपूर और पूरे गाँव के सामने ... " अचानक दर्द से मिली कराह उठी, "उई माँ! वैसे ही लाइनें याद नहीं हो रही थी और अब यह पेट दर्द।"

"पेट दर्द! मैं बहनजी को बुला के लाती हूँ।" मीना दौड़ी और पीछे–पीछे मिट्ठू भी, "बहनजी को बुलाकर लाती हूँ, इलाज कराती हूँ!"

बहनजी ने आते ही सवालों की झड़ी लगाई, "क्या खाया? कोई कटा–फटा फल, बाज़ार की बिना ढकी चीज़ तो नहीं? हाथ सफाई से धोये? जब मिली गरदन हिलाती रही तो वह बोलीं, "अच्छा जाओ, हाथ धो के आओ और दवाई खाओ।"

मिली सरपट गई और झटपट ही आ गई।

"अरे यह क्या! हाथ धुल भी गए? हम्मम ... अब मैं समझी! मिली, तुम्हारे धुले हुए हाथों में अभी भी कीटाणु होंगे," बहनजी ने कहा।

"पर क्यों बहनजी?" मीना और मिली ने एकसाथ पूछा।

"क्योंकि तुमने हाथ धोने के पाँच नियम नहीं अपनाए। पहले हाथ पर पानी डालो, फिर तब तक साबुन लगाओ जब तक झाग न बने। तीसरा कदम हथेलियाँ आपस में रगड़ो और नाखून साफ करो। चौथा कदम–हाथ

बीस सैकेण्ड तक रगड़ो। और पाँचवा अन्तिम कदम, हाथ साफ पानी से धो लो।" बहनजी ने दोनों को समझाया।

और बस फिर अगले दिन ... जब वह सेट पर पहुँची तो इत्तफ़ाकन सीन खाने की मेज़ पर ही फ़िल्माया जाना था। बस फिर क्या? मिली दौड़ी और जाकर हाथ धोने लगी। जब डायरेक्टर साहब ने उससे पूछा तो उसने उन्हें भी बहनजी की बात दोहरा दी। और फिर ...

मिली और रंगीन कपूर खाने की मेज़ के सेट पर –
जो पूरे पाँच कदम से हाथ धोता है, वो कभी बीमार नहीं होता है।

"कट," डायरेक्टर साहब बोले और सारा गाँव तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा!

अनोखा तोहफ़ा

समीर को जब से पता चला है कि उसके घर नन्हा मेहमान आएगा, तब से वह माँ के पेट पर अपना कान लगाकर खिलखिला के हँस पड़ता था।

"माँ–माँ मेरी बहन मुझसे बातें कर रही है। मैंने तो उसे अपने सारे खिलौने तोहफ़े में देने का मन बना लिया है," वह माँ से बोला।

यह सुनकर दादी हँसी और बोलीं, "बेटा तुझे कैसे पता चला कि तुम्हारी बहन ही आएगी?"

"यह मीना की तरह खूब बातें जो करती है," उसने कहा।

माँ ने लाड़ करते हुए कहा – "चलो अब जल्दी करो! तुम्हें स्कूल जाने के लिए तैयार नहीं होना क्या?" माँ को याद जो नहीं था कि आज स्कूल की छुट्टी है।

इतने में मीना और उसकी माँ समीर के घर आए समीर की माँ का हाल जानने।

"अम्मा नमस्ते!" मीना की माँ ने दादीजी से कहा।

"जीती रहो बेटी, आओ बैठो!" दादीमाँ ने मीना की माँ से कहा।

समीर, मीना को देखकर – "अच्छा हुआ दीदी आप आ गई। आज मैं बहुत खुश हूँ कि आप मुझे फलों की चाट बनाना सिखाओगी जो मैं अपनी छोटी बहन को बना के खिलाऊँगा।"

"अरे हाँ! ज़रा ठहरो! मैं दादी से पैसे तो ले लूँ," समीर बोला।

नटखट मिट्ठू से बोले बिना रहा नहीं गया – "फल लाना है चाट बनाना है, बहन को खिलाना और तगड़ा

बनाना है।"

दादी नाराज़ होकर कहने लगी – "क्या लड़का होकर लड़कियों के काम करने के लिए उतावला हो रहा है, अभी कौन–सा तेरी बहन पैदा हो गई है?"

तभी मीना की माँ बोल पड़ी, "अम्मा पैसे दे दो, इसी बहाने घर का काम करना सीख लेगा। लड़के–लड़की में कोई फर्क नहीं होता है।"

अम्मा को पैसे देने ही पड़े। पैसे मिलते ही दोनों बच्चे उछलते–कूदते गोपाल चाचा की दुकान की ओर चल पड़े।

जैसे ही बच्चे गए, समीर की माँ मीना की माँ से कहने लगी, "दीदी समीर के बापू भी उसे खूब सारे तोहफ़े देना चाहते हैं, बताओ ना दीदी हम उसे क्या–क्या दें?"

उन्होंने मुस्कुरा कर कहा, "सबसे अच्छा तोहफ़ा तो कुदरत का दिया हुआ माँ का पहला पीला और गाढ़ा दूध है।"

तभी अम्मा बीच में बोल पड़ी – "नहीं–नहीं! हमने तो अपने बच्चों को नहीं दिया तो यह भला क्यों देगी?" उनकी बात सुनकर मीना की माँ ने बताया, "नहीं अम्मा, यह दूध बच्चे को बीमारियों से सुरक्षित रखता है और हृष्ट–पुष्ट बनाता है। इसे कोलो–स्ट्रम कहते हैं और डाक्टर इसे पिलाने की ख़ास सलाह देते हैं। एक और ज़रूरी बात, जन्म से 6 महीने तक सिर्फ़ माँ का दूध ही बच्चों का सम्पूर्ण आहार है।"

इतने में बच्चों ने आधा दर्जन केले, आधा किलो सेब और आधा किलो नाशपाती को मिलाकर चटपटी चाट बनाई और कहा, "यह लो दादीजी! हमारी चाट तैयार है।"

"आहा! तुम्हारी चाट तो वाकई बहुत स्वादिष्ट है," सभी ने कहा।

"समीर अब तो तुम्हारी बहन ज़रूर मोटी हो जाएगी!" मीना ने कहा।

हा–हा–हा–हा ...

सब लोग ठहाके लगा कर हँसने लगे।

समीर की माँ मन–ही–मन मुस्कुरा रही थीं क्योंकि अनोखा तोहफ़ा जो था उनके पास!

नन्हे पाठकों के शिक्षकों के लिए

1. बच्चों से पूछें कि उन्हें यह कहानियाँ मनोरंजक या शिक्षाप्रद कैसे लगीं। उनसे कहानियाँ दोहराने को कहें।
2. कहानी में उपयुक्त कठिन शब्दों पर बातचीत करें।
3. कहानी में आए प्रमुख सामाजिक मुद्दों और दी गई स्थिति में मीना की भूमिका पर सवाल–जवाब करें।
4. कहानी में प्रस्तुत मीना के प्रमुख गुणों पर बातचीत करें और बच्चों को उसके जैसा बनने की प्रेरणा भी दें।
5. बच्चों में समालोचना करने की क्षमता विकसित करें। यह महत्वपूर्ण है कि बच्चे अपने साथियों के साथ अपने मुद्दों पर स्वतंत्र रूप से चर्चा करें और सामूहिक रूप से समस्याओं का समाधान खोजने का प्रयत्न करें। बच्चों को चर्चा में सहभाग करने के लिए उन्हें बढ़ावा देना चाहिए।
6. बच्चों से पूछें कि कहानी में प्रस्तुत स्थिति में वे क्या करते और क्यों?
7. कहानी के मुख्य संदेश के बारे में बच्चों से पूछें।
8. बच्चों से पूछें, ''आपको इसमें कौन–सा पात्र अच्छा लगा और क्यों?'' यह भी पूछें, ''आपको इसमें कौन–सा पात्र अच्छा नहीं लगा और क्यों?''
9. कहानी में दी गई गतिविधियों को कक्षा में करवाएँ और बच्चों का उस गतिविधि में सहभाग सुनिश्चत करें।
10. बच्चों को मीना की दुनिया में दी गई कहानियों को अपने परिवार के अन्य सदस्यों के साथ बाँटने को कहें।

भाग दो

मीना की दुनिया से कुछ अनमोल पल

सबसे बड़ा इन्सान | सुनहरी को बचाओ | कौन बनेगा स्टार?
सुनील का जादुई चिराग | अनोखा तोहफ़ा

unicef

73, लोदी स्टेट, नई दिल्ली - 110003

संयुक्त राष्ट्र बाल कोष, उत्तर प्रदेश का युनिसेफ़ कार्यालय,
3/194, विशाल खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ - 226010, उत्तर प्रदेश
वेबसाइट - www.unicef.in